पिता हैं तो .....

पिता जीवन है, सम्बल है, शक्ति है
पिता सृ-टि में निर्माण की अभिव्यक्ति है

पिता अंगुली पकड़े बच्चे का सहारा है
पिता कभी कुछ खट्टा-कभी खारा है

पिता पालन है, पो-ण है, परिवार का अनुशासन है
पिता धौंस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है

पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है

पिता अप्रदर्शित-अनंत प्यार है
पिता है तो बच्चों को इंतजार है

पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं
पिता हैं तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं

पिता से परिवार में प्रतिपल राग है
पिता से ही माँ की बिंदी और सुहाग है

पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखने का एहसान है

पिता सुरक्षा है, अगर सिर पर हाथ है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है

तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो
पिता का अपमान नहीं, उन पर अभिमान करो

क्योंकि माँ-बाप की कमी को कोई बाँट नहीं सकता
और ईश्वर भी इनके आशी-नों को काट नहीं सकता

विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा है
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है

विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्रा व्यर्थ है
यदि बेटे के होते माँ-बाप असमर्थ हैं

वो खुशनसीब हैं माँ-बाप जिनके साथ होते हैं
क्योंकि माँ-बाप के आशी-नों के हजारों हाथ होते हैं
क्योंकि माँ-बाप के आशी-नों के हजारों हाथ होते हैं

स्व ओम व्यास

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

हिंदी की महानता

हिंदी अपनी कितनी प्यारी,
जापानी चीनी से न्यारी ।

देव भा-ा की है यह बेटी,
कद में है उससे ना छोटी ।

शब्दावली है कितनी सारी,
फिर भी खोज अभी है जारी ।

मात्राओं का अनुपम मेल,
बच्चे सीखें जैसे खेल ।

आसानी से समझ में आती,
तभी तो ऊँचा आसन पाती ।

इसकी ग्रामर बहुत बड़ी है,
सीना ताने हुए खड़ी है ।

स्वर, व्यंजन का साथ निराला,
रस छंदों का है बोल बाला ।

अलंकार का प्रयोग है प्यारा,
इसमें सिमटा है जग सारा ।

हिंदी है भा-ाओं की रानी,
ना है कोई इसका सानी ।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

विश्वास अनिवार्य

एक बार त्जेकुंग ने महात्मा कन्फ्यूशियस से पूछा- "सुचारू रूप से राज्य-संचालन के लिए किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता है ?"

कन्फ्यूशियस ने उत्तर दिया- "पर्याप्त अन्न, पर्याप्त सेना, और राजा के प्रति प्रजा में विश्वास ।"

त्जेकुंग ने पूछा - "यदि ये तीनों वस्तुएं एक साथ प्राप्त न हों तो इनमें से पहले किस वस्तु को छोड़ा जा सकता है ?"

कन्फ्यूशियस ने कहा- "सेना को ।" त्जेकुंग ने फिर पूछा - "और भगवन् , यदि शे-न दो वस्तुओं में से भी एक का परित्याग करना पड़े तो किसे छोड़ा जा सकता है ?"

कन्फ्यूशियस ने कहा- "अन्न । अनन्त काल से मनुय मृत्यु के मुख में तो जाता ही रहा है । लेकिन जिस राजा में प्रजा का विश्वास न हो, उसका राज्य कभी टिक नहीं सकता ।"

संग्रहकर्त्ताः-
आदर्श कुमार
जे टी ओ, सी एण्ड सी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय